ललिता त्रिशती स्तोत्रम्

॥ ध्यानम् ॥
अतिमधुर चापहस्तां अपरिमिता मोदबाण सौभाग्याम् ।
अरुणा मतिशय करुणां अभिनवकुल सुन्दरीं वन्दे ॥

श्री हयग्रीव उवाच
॥ स्तोत्रम् ॥
ककाररूपा कल्याणी कल्याण गुणशालिनी ।
कल्याण शैलनिलया कमनीया कलावती ॥ १॥

कमलाक्षी कल्मषघ्नी करुणामृत सागरा ।
कदम्ब काननावासा कदम्ब कुसुमप्रिया ॥ २॥

कन्दर्प विद्या कन्दर्प जनकापाङ्ग वीक्षणा ।
कर्पूर वीटी सौरभ्य कल्लोलित ककुप्तटा ॥ ३॥

कलिदोष हरा कञ्जलोचना कम्रविग्रहा ।
कर्मादि साक्षिणी कारयित्री कर्मफलप्रदा ॥ ४॥

एकाररूपा चैकाक्ष र्येकानेकाक्षराकृतिः ।
एतत्त दित्य निर्देश्या चैकानन्द चिदाकृतिः ॥ ५॥

एवमित्यागमा बोध्या चैकभक्ति मदर्चिता ।
एकाग्रचित्त निर्ध्याता चैषणा रहिताद्दता ॥ ६॥

एला सुगन्धि चिकुरा चैनः कूट विनाशिनी ।
एकभोगा चैकरसा चैकैश्वर्य प्रदायिनी ॥ ७॥

एकातपत्र साम्राज्य प्रदा चैकान्त पूजिता ।
एधमानप्रभा चैजदनेक जगदीश्वरी ॥ ८॥

एकवीरादि संसेव्या चैक प्राभव शालिनी ।
ईकार रूपा चेशित्री चेप्सितार्थ प्रदायिनी ॥ ९॥

ईद्दगित्य विनिर्देश्या चेश्वरत्व विधायिनी ।
ईशानादि ब्रह्ममयी चेशित्वा द्यष्ट सिद्धिदा ॥ १०॥

ईक्षित्रीक्षण सृष्टाण्ड कोटि रीश्वर वल्लभा ।
ईडिता चेश्वरार्धाङ्ग शरीरे शाधिदेवता ॥ ११॥

ईश्वर प्रेरणकरी चेश ताण्डव साक्षिणी ।
ईश्वरोत्सङ्ग निलया चेतिबाधा विनाशिनी ॥ १२॥

ईहा विराहिता चेश शक्तिरीषत् स्मिताननना ।
लकाररूपा ललिता लक्ष्मीवाणी निषेविता ॥ १३॥

लाकिनी ललनारूपा लसद्दाडिम पाटला ।
ललन्तिका लसत्फाला ललाटनय नार्चिता ॥ १४॥

लक्षणोज्ज्वल दिव्याङ्गी लक्ष कोट्यण्ड नायिका ।

लक्ष्यार्था लक्षणागम्या लब्धकामा लतातनुः ॥ १५॥

ललामराज दलिका लम्बिमुक्ता लताञ्चिता ।
लम्बोदर प्रसूर्लभ्या लज्जाढ्या लयवर्जिता ॥ १६॥

ह्रींकाररूपा ह्रींकार निलया ह्रींपदप्रिया ।
ह्रींकारबीजा ह्रींकार मन्त्रा ह्रींकार लक्षणा ॥ १७॥

ह्रींकार जप सुप्रीता ह्रींमती ह्रीं विभूषणा ।
ह्रींशीला ह्रींपदाराध्या ह्रींगर्भा ह्रीं पदाभिधा ॥ १८॥

ह्रींकार वाच्या ह्रींकार पूज्या ह्रींकार पीठिका ।
ह्रींकार वेद्या ह्रींकार चिन्त्या ह्रीं ह्रीं शरीरिणी ॥ १९॥

हकाररूपा हलधृत् पूजिता हरिणेक्षणा ।
हरप्रिया हराराध्या हरिब्रह्मेन्द्र वन्दिता ॥ २०॥

हयारूढा सेवितांघ्रिर् हयमेधस मर्चिता ।
हर्यक्ष वाहना हंस-वाहना हतदानवा ॥ २१॥

हत्यादि पापशमनी हरिदश्वादि सेविता ।
हस्तिकुम्भोत्तुङ्ग कुचा हस्तिकृत्ति प्रियाङ्गना ॥ २२॥

हरिद्रा कुङ्कुमा दिग्धा हर्यश्वाद्य मरार्चिता ।
हरिकेश सखी हादि विद्या हालामदोल्लसा ॥ २३॥

सकाररूपा सर्वज्ञा सर्वेशी सर्वमङ्गला ।
सर्वकर्त्री सर्वभर्त्री सर्वहन्त्री सनातना ॥ २४॥

सर्वानवद्या सर्वाङ्ग सुन्दरी सर्वसाक्षिणी ।
सर्वात्मिका सर्वसौख्य दात्री सर्वविमोहिनी ॥ २५॥

सर्वाधारा सर्वगता सर्वावगुण वर्जिता ।
सर्वारुणा सर्वमाता सर्वभूषण भूषिता ॥ २६॥

ककारार्था कालहन्त्री कामेशी कामितार्थदा ।
कामसञ्जीविनी कल्या कठिनस्तन मण्डला ॥ २७॥

करभोरुः कलानाथ मुखी कच जिताम्भुदा ।
कटाक्ष स्यन्दि करुणा कपालि प्राणनायिका ॥ २८॥

कारुण्य विग्रहा कान्ता कान्तिधूत जपावलिः ।
कलालापा कम्बुकण्ठी करनिर्जित पल्लवा ॥ २९॥

कल्पवल्ली समभुजा कस्तूरी तिलकाञ्चिता ।
हकारार्था हंसगतिर् हाटका भरणोज्ज्वला ॥ ३०॥

हारहारि कुचाभोगा हाकिनी हल्यवर्जिता ।
हरित्पति समाराध्या हठात्कार हतासुरा ॥ ३१॥

हर्षप्रदा हविर्भोक्त्री हार्द सन्तम सापहा ।
हल्ली हालास्य सन्तुष्टा हंसमन्त्रार्थ रूपिणी ॥ ३२॥

हानोपादान निर्मुक्ता हर्षिणी हरिसोदरी ।
हाहाहूहू मुखस्तुत्या हानिवृद्धि विवर्जिता ॥ ३३॥

हय्यङ्गवीन हृदया हरिकोपा रुणांशुका ।
लकाराख्या लतापूज्या लयस्थित्युद्भवेश्वरी ॥ ३४॥

लास्यदर्शन सन्तुष्टा लाभालाभ विवर्जिता ।
लङ्घ्ये तराज्ञा लावण्य शालिनी लघु सिद्धिदा ॥ ३५॥

लाक्षारस सवर्णाभा लक्ष्मणाग्रज पूजिता ।
लभ्यतरा लब्धभक्ति सुलभा लाङ्गलायुधा ॥ ३६॥

लग्नचामर हस्त श्री शारदा परिवीजिता ।
लज्जापद समाराध्या लम्पटा लकुलेश्वरी ॥ ३७॥

लब्धमाना लब्धरसा लब्धसम्पत्स मुन्नतिः ।
ह्रींकारिणी च ह्रींकारी ह्रींमध्या ह्रीं शिखामणिः ॥ ३८॥

ह्रींकार कुण्डाग्नि शिखा ह्रींकार शशिचन्द्रिका ।
ह्रींकार भास्कर रुचिर् ह्रींकारांभोद चञ्चला ॥ ३९॥

ह्रींकार कन्दाङ्कुरिका ह्रींकारैक परायणा ।
ह्रींकार दीर्घिकाहंसी ह्रींकारोद्यान केकिनी ॥ ४०॥

ह्रींकारारण्य हरिणी ह्रींकारावाल वल्लरी ।

ह्रींकार पञ्जरशुकी ह्रींकाराङ्गण दीपिका ॥ ४१॥

ह्रींकार कन्दरा सिंही ह्रींकाराम्भोज भृङ्गिका ।
ह्रींकार सुमनो माध्वी ह्रींकार तरुमञ्जरी ॥ ४२॥

सकाराख्या समरसा सकलागम संस्तुता ।
सर्ववेदान्त तात्पर्य भूमिः सदसदाश्रया ॥ ४३॥

सकला सच्चिदानन्दा साध्या सद्गति दायिनी ।
सनकादि मुनिध्येया सदाशिव कुटुम्बिनी ॥ ४४॥

सकालाधिष्ठान रूपा सत्यरूपा समाकृतिः ।
सर्वप्रपञ्च निर्मात्री समानाधिक वर्जिता ॥ ४५॥

सर्वोत्तुङ्गा सङ्गहीना सगुणा सकलेष्टदा ।
ककारिणी काव्यलोला कामेश्वर मनोहरा ॥ ४६॥

कामेश्वर प्राणानाडी कामेशोत्सङ्ग वासिनी ।
कामेश्वरा लिङ्गिताङ्गी कामेश्वर सुखप्रदा ॥ ४७॥

कामेश्वर प्रणयिनी कामेश्वर विलासिनी ।
कामेश्वर तपः सिद्धिः कामेश्वर मनःप्रिया ॥ ४८॥

कामेश्वर प्राणनाथा कामेश्वर विमोहिनी ।
कामेश्वर ब्रह्मविद्या कामेश्वर गृहेश्वरी ॥ ४९॥

कामेश्वरा ह्लादकरी कामेश्वर महेश्वरी ।
कामेश्वरी कामकोटि निलया काङ्क्षि तार्थदा ॥ ५०॥

लकारिणी लब्धरूपा लब्धधी र्लब्ध वाञ्छिता ।
लब्धपाप मनोदूरा लब्धा हङ्कार दुर्गमा ॥ ५१॥

लब्धशक्ति र्लब्धदेहा लब्धैश्वर्य समुन्नतिः ।
लब्धबुद्धि र्लब्धलीला लब्धयौवन शालिनी ॥ ५२॥

लब्धातिशय सर्वाङ्ग सौन्दर्या लब्धविभ्रमा ।
लब्धरागा लब्धगतिर् लर्ब्धनानागम स्थितिः ॥ ५३॥

लब्धभोगा लब्धसुखा लब्धहर्षाभि पूजिता ।
ह्रींकार मूर्ति र्ह्रीण्कार सौधशृङ्ग कपोतिका ॥ ५४॥

ह्रींकार दुग्धाब्धि सुधा ह्रींकार कमलेन्दिरा ।
ह्रींकार मणिदीपार्चि र्ह्रींकार तरुशारिका ॥ ५५॥

ह्रींकार पेटकमणि र्ह्रींकार दर्श बिम्बिता ।
ह्रींकार कोशासिलता ह्रींकारास्थान नर्तकी ॥ ५६॥

ह्रींकार शुक्तिका मुक्ता मणि र्ह्रींकार बोधिता ।
ह्रींकार मय सौवर्ण स्तम्भ विद्रुम पुत्रिका ॥ ५७॥

ह्रींकार वेदोपनिषद् ह्रींकाराध्वर दक्षिणा ।
ह्रींकार नन्दना राम नव कल्पक वल्लरी ॥ ५८॥

ह्रींकार हिमवद्गङ्गा ह्रींकारार्णव कौस्तुभा ।
ह्रींकार मन्त्र सर्वस्वा ह्रींकार पर सौख्यदा ॥ ५९॥

॥ इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे उत्तरा खण्डे
श्री हयग्रीवागस्त्य संवादे
श्रीललितात्रिशती स्तोत्र कथनं सम्पूर्णम् ॥